The Research Dialogue
International Open Access, Peer Reviewed & Refereed Journal
An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 5 | Issue 3 | October 2026
ISSN: 2583-438X (Online)
Impact Factor: SJIF: 5.087, RPRI 4.79/6.69
Website: https://theresearchdialogue.com/

सामाजिक विज्ञान में रचनावादी अधिगम आधारित प्रतिमान के माध्यम से शिक्षार्थियों में उच्च स्तरीय चिंतन कौशल (HOTS) का विकास

प्रशांत सलौदिया[1], प्रो.(डॉ.) सुनीता सिंह[2]

[1]शोध छात्र, शिक्षा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय

[2]प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, नारी शिक्षा निकेतन पीजी कॉलेज, लखनऊ

[1]Email- prashantsalaudia@gmail.com, [2]Email- dsunitasingh@gmail.com

DOI: https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i3.30

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Received: 10-09-2026

Accepted: 25-10-2026

Published: 31-10-2026

Corresponding Author:
प्रशांत सलौदिया

मुख्य शब्द:- रचनावादी अधिगम प्रतिमान, उच्च स्तरीय चिंतन कौशल (HOTS- HIGH ORDER THINKING SKILL) सामाजिक विज्ञान और 5E मॉडल

सारांश-

वर्तमान समय में ज्ञान आधारित एवं तीव्र गति से परिवर्तित हो रहे समाज में शिक्षा का उद्देश्य केवल शिक्षार्थियों को तथ्यों एवं सूचनाओं का स्मरण कराना ही नहीं है, बल्कि उनमें तार्किक चिंतन, नए-नए विचारों, समस्या-समाधान, सृजनात्मकता, विश्लेषण, मूल्यांकन तथा निर्णय लेने जैसे उच्च स्तरीय चिंतन कौशल कौशल (HOTS) का विकास करना शामिल है। उच्च स्तरीय चिंतन कौशल शिक्षार्थियों को जटिल परिस्थितियों में उपलब्ध सूचनाओं का संश्लेषण एवं विश्लेषण करने, विभिन्न तरीकों से मूल्यांकन करने, नए-नए समाधान विकसित करने में सक्षम बनाते हैं, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 भी आलोचनात्मक चिंतन, समस्या-समाधान, सृजनतामकता तथा उच्च स्तरीय संज्ञानात्मक क्षमताओं के विकास पर विशेष बल देती है। इस वैचारिक शोध-पत्र का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय में अध्यनरत शिक्षार्थियों में उच्च स्तरीय चिंतन कौशल के विकास (HOTS) में रचनात्मक अधिगम की भूमिका का विश्लेषण करना है। अध्ययन में रचनावादी अधिगम सिद्धांत द्वारा शिक्षार्थियों में निष्क्रिय अधिगमकर्ता न होकर अपने पूर्व अनुभवों, प्रश्नो, खोज, संवाद, सहयोग एवं समस्या-समाधान के माध्यम से ज्ञान का निर्माण कराना हैं।

OPEN ACCESS

प्रस्तावना-

21वीं सदीं में शिक्षा के स्वरूप में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है। सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी के तीव्र विकास, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, वैश्वीकरण, सामाजिक परिवर्तन तथा रोजगार के बदलते स्वरूप ने शिक्षा के उद्देश्यों को पुर्नपरिभाषित किया है। वर्तमान समय में केवल यह जानना पर्याप्त नहीं है कि शिक्षार्थी क्या जानते हैं बल्कि यह ज्यादा महत्वपूर्ण है कि वह अपने ज्ञान का उपयोग कैसे करते हैं? कैसे विश्लेषण करते हैं? कैसे विश्वशनीयता का मूल्यांकन करते हैं? तथा कैसे नए-नए विचार विकसित करते हैं? जिससे इसी संदर्भ में उच्च स्तरीय चिंतन कौशल (HOTS) का महत्व बढ़ जाता हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में कार्यात्मक क्षमता के साथ-साथ आलोचनात्मक चिंतन, समस्या-समाधान जैसे उच्च स्तरीय चिंतन कौशल (HOTS) के विकास पर बल देती है। एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा माध्यमिक स्तर के अधिगम प्रतिफल में भी समस्या-समाधान, आलोचनात्मक चिंतन तथा रचनात्मकता को 21वीं सदी के महत्वपूर्ण कौशलों के रूप में शामिल किया है। अतः माध्यमिक विद्यालय के शिक्षार्थियों में उच्च स्तरीय चिंतन कौशल (HOTS) के विकास के लिए

एक महत्वपूर्ण अवस्था है। इस अवस्था में शिक्षण यदि केवल व्याख्यान, पाठ्यपुस्तक तथा स्मृति आधारित प्रश्नों तक सीमित रहता है, तो शिक्षार्थियों को जटिल समस्याओं पर स्वतंत्र रूप से सीखने के पर्याप्त अवसर नहीं मिल पाते। इसके विपरीत रचनात्मक अधिगम शिक्षार्थियों को स्वयं खोजने, प्रश्न करने, विचार प्रस्तुत करने, प्रमाणों की जांच करने तथा समस्याओं के विभिन्न समाधान खोजने के अवसर प्रदान करते हैं।

अध्ययन की आवश्यकता औचित्य एवं उद्देश्य- शिक्षार्थियों की संज्ञानात्मक क्षमताओं में तेजी से विकास होता है वे अमूर्त विचारों, तार्किक संबंधों, कारण-प्रभाव, वैकल्पिक दृष्टिकोण तथा जटिल समस्याओं पर विचार करने में सक्षम होने लगते हैं। इसलिए इस अवस्था में केवल निम्न स्तरीय संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं पर आधारित शिक्षण को पर्याप्त नहीं माना जा सकता। उच्च स्तरीय चिंतन कौशल (HOTS) का विकास करने के लिए शिक्षार्थियों में रटने की प्रवृत्ति में कमी लाना तथा स्मरण के स्थान पर उनके अर्थ एवं उपयोग पर विचार करने का अवसर प्रदान करना आवश्यक हो जाता है, समस्या-समाधान क्षमता के लिए तर्क एवं विश्लेषण करना आलोचनात्मक चिंतन के लिए शिक्षार्थियों में सही एवं गलत के बीच अंतर करना सृजनात्मकता के लिए नवीन समाधान एवं विचार उत्पन्न करना, निर्णय लेने की क्षमता के लिए प्रमाणों एवं तर्कों के आधार पर निष्कर्ष पर पहुँचना आवश्यक माना जाता है। NEP-2020 के उद्देश्यों की पूर्ति में भी आलोचनात्मक चिंतन, समस्या-समाधान, रचनात्मकता तथा अवधारणात्मक समझ को विशेष महत्व दिया गया है। इसलिए उच्च स्तरीय चिंतन कौशल (HOTS) के विकास हेतु ऐसी शिक्षण पद्धति आवश्यक है। जिसमें शिक्षार्थी सुनने के बजाय अन्वेषण करें, केवल उत्तर देने के बजाय प्रश्न करें तथा केवल जानकारी ग्रहण करने के बजाय ज्ञान का निर्माण करें। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य उच्च स्तरीय चिंतन कौशल (HOTS) की संकल्पना को स्पष्ट करना, रचनात्मक अधिगम की अवधारणा का विश्लेषण करना, शिक्षार्थियों में उच्च स्तरीय चिंतन कौशल (HOTS) के विकास में रचनावादी अधिगम की भूमिका का अध्ययन करना रचनावाद विशेषण की प्रमुख रणनीतियों की पहचान करना, तथा शिक्षण में उच्च स्तरीय चिंतन कौशल (HOTS) विकसित करने हेतु शिक्षकों के लिए व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत करना है।

अध्ययन से संबंधित सैद्धांतिक आधार- सैद्धांतिक आधार के अंतर्गत पियाजे के अनुसार- बालक अपने अनुभवों के आधार पर ज्ञान का निर्माण करता है, नई जानकारी को पूर्ण ज्ञान के साथ जोड़ने की प्रक्रिया में आत्मसातीकरण तथा समायोजन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जिससे शिक्षार्थी अधिक अमूर्त एवं तार्किक चिंतन की ओर बढ़ते हैं। वाइगोत्स्की के द्वारा दिए गए सामाजिक रचनावाद में सामाजिक अंतःक्रिया तथा भाषा को संज्ञानात्मक विकास में महत्वपूर्ण माना। उनके विचारों में निकटवर्ती विकास क्षेत्र जिसे जीडीपी तथा पाड़ (स्कैफोल्डिंग) विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। अतः समूह कार्य, समूह विचार-विमर्श, सहयोगात्मक समस्या-समाधान एवं शिक्षक द्वारा उचित मार्गदर्शन उच्च स्तरीय चिंतन कौशल (HOTS) के विकास में सहायक हो सकते हैं। बाइबी द्वारा दिए गए 5ई. इन्स्ट्रक्शनल मॉडल माध्यमिक स्तर पर रचनावादी अधिगम को व्यवहार में लागू करने के लिए अत्यंत उपयोगी ढांचा प्रस्तुत करता है। बाइबी के मॉडल में पांच चरण संलग्न (ENGAGE), अन्वेषण (EXPLORE), व्याख्या (EXPLAIN), विस्तार (ELEBORATE), तथा मूल्यांकन (EVALUATION) शामिल है। जो शिक्षार्थी में उच्च स्तरीय चिंतन कौशल (HOTS) विकसित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वहीं अमेरिकी मनोवैज्ञानिक जेरोम ब्रूनर द्वारा प्रतिपादित रचनावादी अधिगम सिद्धांत का कहना है कि शिक्षार्थी ज्ञान का निष्क्रिय प्राप्त करता नहीं है, बल्कि अपने अनुभवों और पूर्व ज्ञान के आधार पर सक्रिय रूप से नए विचारों एवं ज्ञान का निर्माण करता है जिसके लिए ब्रूनर ने बताया कि बालक जन्म से 1.5 वर्ष तक क्रियात्मक अवस्था में रहता है इसमें बालक शारीरिक क्रियाओं के माध्यम से सीखना है। 1.5 वर्ष से 7 वर्ष तक चित्रात्मक अवस्था में रहता है जहां वह अपने मन में मानसिक छवियों एवं चित्रों के माध्यम से सीखता है तथा 7 वर्ष से ऊपर की अवस्था सांकेतिक या प्रतीकात्मक अवस्था कहलाती है जहां बालक अमूर्त प्रतिकॉ , तार्किकता एवं भाषा के माध्यम से जटिल विषयों को समझता है एवं सीखता है। ब्रूनर का सिद्धांत शिक्षार्थी में स्वतंत्र अध्ययन करने, कार्य व क्रिया करने, खोज करने, तथा समस्या-समाधान करने संबंधी योग्यताओं एवं क्षमताओं के विकास में प्राथमिक माना जाता है जिससे शिक्षार्थी में उच्च स्तरीय चिंतन कौशल (HOTS) का विकास होता है।

रचनावादी अधिगम प्रतिमान की अवधारणा- रचनावादी या निर्माणवादी अधिगम प्रतिमान एक आधुनिक शिक्षण अधिगम दृष्टिकोण है जिसके अनुसार ज्ञान को शिक्षक द्वारा केवल शिक्षार्थियों तक पहुंचाना ही नहीं है, बल्कि शिक्षार्थियों में अपने पूर्व ज्ञान, अनुभवों, सामाजिक अतःक्रियाओं, चिंतन तथा सक्रिय सहभागिता के माध्यम से स्वयं ज्ञान का निर्माण कराना है। इस दृष्टिकोण में अधिगम एक सक्रिय, अर्थपूर्ण तथा सामाजिक प्रक्रिया है। रचनावादी अधिगम प्रतिमान की यह मान्यता है कि प्रत्येक शिक्षार्थी अपने अनुभवों एवं परिवेश के आधार पर नई अवधारणाओं का निर्माण करता है। इसलिए सीखना केवल तथ्यों को याद करना नहीं, बल्कि उन्हें समझना, विश्लेषित करना वास्तविक जीवन से जोड़ना तथा नए संदर्भों में उनका प्रयोग भी करना है। इस प्रतिमान में शिक्षक की भूमिका ज्ञान के एकमात्र स्रोत के रूप में नहीं होती, बल्कि एक सुविधादाता, मार्गदर्शन, सह-अधिगामी के रूप में होती है। शिक्षक ऐसा शिक्षण वातावरण तैयार करता है जिसमें शिक्षार्थी प्रश्न पूछे, अन्वेषण करें, सहयोग करें, और स्वयं को निष्कर्ष तक पहुंचाएं। सामाजिक विज्ञान शिक्षण में रचनावादी अधिगम प्रतिमान विशेष रूप से प्रभावी है क्योंकि इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र और अर्थशास्त्र जैसे विषय शिक्षार्थियों को वास्तविक जीवन की सामाजिक समस्याओं, लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं तथा मानवीय अनुभवों से जोड़ती है। जब शिक्षार्थी ऐतिहासिक स्रोतों का विश्लेषण करते हैं, सामाजिक समस्याओं पर चर्चा करते हैं, मानचित्रों का अध्ययन करते हैं या नागरिक मुद्दों पर तर्क प्रस्तुत करते हैं तब उनमें उच्च स्तरीय चिंतन कौशल (HOTS) का विकास होता है। पियाजे के संज्ञानात्मक रचनावाद वाइगोत्सकी के सामाजिक रचनावाद ब्रूनर के खोजपरक अधिगम तथा जॉन डीवी के अनुभवात्मक अधिगम सिद्धांत बाइबी के 5ई. इन्स्ट्रक्शनल मॉडल आदि प्रमुख सैद्धांतिक आधार हैं जिन्होंने इस बात पर बोल दिया कि प्रभावी अधिगम तभी संभव है जब शिक्षार्थी स्वयं ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग ले।

सामाजिक विज्ञान शिक्षण में रचनावादी अधिगम प्रतिमान का अनुप्रयोग- सामाजिक विज्ञान का उद्देश्य केवल इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र, एवं अर्थशास्त्र से संबंधित तथ्यों का ज्ञान प्रदान करना ही नहीं है, बल्कि शिक्षार्थियों में सामाजिक जागरूकता, लोकतांत्रिक मूल्यों, आलोचनात्मक चिंतन, समस्या-समाधान निर्णय-निर्माण, तथा उत्तरदायी नागरिकता का विकास करना भी है। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए रचनावादी अधिगम प्रतिमान अत्यंत प्रभावी माना जाता है। यह प्रतिमान शिक्षार्थियों को निष्क्रिय श्रोता के स्थान पर सक्रिय ज्ञान-निर्माता बनता है और उन्हें अनुभव, अन्वेषण तथा सहयोगात्मक अधिगम के माध्यम से सीखने के अवसर प्रदान करता है। जिसके अंतर्गत समस्या-आधारित अधिगम सामाजिक विज्ञान में स्थानीय एवं समसमायिक सामाजिक समस्याओं को शिक्षण का आधार बनाया जा सकता है। उदाहरण के लिए जल संकट, बेरोजगारी, प्रदूषण, जनसंख्या वृद्धि, जलवायु परिवर्तन जैसे विषयों पर शिक्षार्थियों से समस्या के कारण, प्रभाव तथा समाधान का विश्लेषण कराया जा सकता है। तथा उनमें आलोचनात्मक चिंतन एवं समस्या-समाधान क्षमता का विकास किया जा सकता है। परियोजना आधारित अधिगम द्वारा शिक्षार्थियों को स्थानीय इतिहास, सांस्कृतिक विरासत, पंचायत व्यवस्था, जनसंख्या सर्वेक्षण, पर्यावरण संरक्षण या स्थानीय आर्थिक गतिविधियों पर परियोजना कार्य दिया जा सकता है जहां परियोजना के दौरान वे आंकड़े एकत्रित करते हैं, उनका विश्लेषण करते हैं, निष्कर्ष निकालते हैं तथा प्रस्तुतीकरण करते हैं इससे विश्लेषणात्मक एवं सृजनात्मक चिंतन का विकास होता है। सहकारी अधिगम द्वारा रचनावादी दृष्टिकोण में समूह कार्य का विशेष महत्व है। सामाजिक विज्ञान की कक्षा में शिक्षार्थियों को छोटे समूह में विभाजित कर सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक अथवा राजनीतिक विषयों पर चर्चा कराई जा सकती है। समूह में विचारों का आदान-प्रदान करने से विभिन्न दृष्टिकोण को समझने तथा तार्किक निष्कर्ष तक पहुंचने की क्षमता विकसित होती है। वाद-विवाद एवं चर्चा अधिगम द्वारा लोकतंत्र, मानवाधिकार, सामाजिक न्याय, वैश्वीकरण, पर्यावरण संरक्षण तथा संवैधानिक मूल्य जैसी विषयों पर वाद-विवाद एवं चर्चा-परीचर्चा शिक्षार्थियों में तर्कशक्ति, प्रमाण आधारित सोच तथा निर्णय निर्माण की क्षमता विकसित करती है। शिक्षार्थी अपने विचारों को तार्किक ढंग से प्रस्तुत करना तथा दूसरों के विचारों को का सम्मान करना सिखाते हैं। केश अध्ययन द्वारा सामाजिक विज्ञान में वास्तविक घटनाओं एवं समकालीन सामाजिक मुद्दों के अध्ययन द्वारा शिक्षार्थियों को विभिन्न स्थिति का विश्लेषण करने का अवसर दिया जा सकता है। भूमिका निर्वहन के माध्यम से शिक्षार्थियों को ऐतिहासिक व्यक्तित्व संविधान सभा के सदस्यों, ग्राम पंचायत, संसद, न्यायालय अथवा संयुक्त राष्ट्र जैसी संस्थाओं की भूमिकाओं का अभिनय करा सकते हैं। क्षेत्र भ्रमण एवं

अनुभवात्मक अधिगम द्वारा संग्रहालय, ऐतिहासिक स्थल, पंचायत, न्यायालय, ग्राम सभा तथा स्थानीय उद्योगों के शैक्षिक भ्रमण से शिक्षार्थियों को वास्तविक अनुभव मिलता है। ऐसे अनुभव पुस्तकीय ज्ञान को वास्तविक जीवन से जोड़ते हैं तथा स्थायी अधिगम को बढ़ावा देते हैं। स्रोत आधारित शिक्षण द्वारा इतिहास एवं नागरिक-शास्त्र के शिक्षण में मूल दस्तावेज मानचित्र, समाचार-पत्र, सरकारी रिपोर्ट, जन जागरण आंकड़े तथा डिजिटल आलेखों का उपयोग शिक्षार्थियों में स्रोतों का विश्लेषण, प्रमाणों का मूल्यांकन तथा निष्कर्ष निकालने की क्षमता विकसित करते हैं। सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी द्वारा अधिगम डिजिटल मानचित्र, ई-सामग्री, शैक्षिक वीडियो, वर्चुअल संग्रहालय, ऑनलाइन अभिलेख तथा इंटरएक्टिव प्रस्तुतियों का उपयोग सामाजिक विज्ञान शिक्षण को अधिक प्रभावी एवं रुचिकर बनाता है। सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी शिक्षार्थियों को स्वतंत्र खोज, सूचना विश्लेषण तथा डिजिटल साक्षरता विकसित करने में सहायता करती हैं।

रचनावादी अधिगम प्रतिमान एवं उच्च स्तरीय चिंतन कौशल (HOTS)- रचनावादी अधिगम प्रतिमान का मूल उद्देश्य शिक्षार्थियों को निष्क्रिय ज्ञान-ग्राही के स्थान पर सक्रिय ज्ञान निर्माता बनना है। इस प्रतिमान में शिक्षार्थी अपने पूर्व अनुभवों सामाजिक अंतःक्रियाओ, अन्वेषण, प्रश्नोत्तरी, सहयोगात्मक अधिगम तथा चिंतन के माध्यम से ज्ञान का निर्माण करते हैं। परिणामस्वरुप उनमें केवल विषय-वस्तु का ज्ञान ही नहीं, बल्कि विश्लेषणात्मक चिंतन, आलोचनात्मक चिंतन, समस्या-समाधान तथा निर्णय निर्माण जैसी उच्च स्तरीय चिंतन कौशल (HOTS) का विकास भी होता है। सामाजिक विज्ञान शिक्षण में ये कौशल विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह विषय शिक्षार्थियों को सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं को समझने और उनका विवेकपूर्ण समाधान खोजने के लिए प्रेरित करता है। इसके अंतर्गत रचनावादी अधिगम एवं विश्लेषणात्मक चिंतन के द्वारा किसी घटना, समस्या या अवधारणा को उसके विभिन्न घटकों में विभाजित करके उनके बीच संबंधों, कारणों एवं परिणामों को समझने का प्रयास करता है। रचनावादी कक्षा में शिक्षार्थियों को ऐतिहासिक घटनाओं, सामाजिक समस्याओं, आर्थिक नीतियों तथा भौगोलिक परिस्थितियों का विश्लेषण करने के अवसर दिए जाते हैं। रचनावादी अधिगम एवं आलोचनात्मक चिंतन के माध्यम से उपलब्ध तथ्यों, तर्कों एवं प्रमाणों के आधार पर किसी विचार, घटना तथा निर्णय का निष्पक्ष मूल्यांकन करना शामिल है। रचनावादी अधिगम शिक्षार्थियों को प्रश्न पूछने, प्रमाण खोजने, विभिन्न दृष्टिकोण का परीक्षण तथा तर्कसंगत निष्कर्ष निकालने के लिए प्रेरित करता है। रचनावादी अधिगम द्वारा समस्या-समाधान कौशल की प्रक्रिया में शिक्षार्थी किसी समस्या की पहचान करते हैं, उसके कारणों का विश्लेषण करते हैं संभावित विकल्पों पर विचार करते हैं तथा सर्वोत्तम समाधान का चयन करते हैं। रचनावादी कक्षा में वास्तविक जीवन की समस्याओं को शिक्षण का आधार बनाया जाता है। रचनावादी शिक्षण के अंतर्गत निर्णय-निर्माण, कौशल का विकास, उपलब्ध विकल्पों में से तथ्यों, मूल्यों तथा परिस्थितियों के आधार पर सर्वोत्तम विकल्प का चयन कराना है। जिससे शिक्षार्थियों में विभिन्न सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों का अध्ययन कर तर्कसंगत निर्णय लेने के अवसर प्राप्त हो सके।

शैक्षिक निहितार्थ- रचनावादी अधिगम प्रतिमान सामाजिक विज्ञान शिक्षण को अधिक प्रभावी, अर्थपूर्ण तथा शिक्षार्थी-केंद्रित बनता है। यह केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं रहता, बल्कि शिक्षार्थियों में उच्च स्तरीय चिंतन कौशल (HOTS), सामाजिक उत्तरदायित्व तथा लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास भी करता है। प्रस्तुत वैचारिक अध्ययन के आधार पर विभिन्न शैक्षिक निहितार्थ देखने मिलते हैं जिसमें शिक्षार्थी-केंद्रित शिक्षण को बढ़ावा देकर रचनावादी अधिगम प्रतिमान के द्वारा उनके सक्रिय सहभागिता, आत्मविश्वास तथा सीखने की रुचि में वृद्धि होती है। सामाजिक विज्ञान शिक्षण को जीवनापयोगी बनाने में यह दृष्टिकोण वास्तविक जीवन की समस्याओं से जोड़ता है, इससे शिक्षार्थी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं पर्यावरणीय मुद्दों को समझने तथा उनके समाधान खोजने में सक्षम बनते हैं। शिक्षार्थियों में लोकतांत्रिक एवं संवैधानिक मूल्यों का विकास, समूह चर्चा, सहयोगात्मक अधिगम, वाद-विवाद एवं भूमिका निर्वहन जैसी गतिविधियों के माध्यम से होता है जिससे वे सहिष्णुता, समानता, सामाजिक न्याय, उत्तरदायित्व तथा लोकतांत्रिक मल्यों जैसी चिजों को सीखते हैं। रचनावादी प्रतिमान शिक्षक को केवल ज्ञान देने वाले नहीं बल्कि अधिगम का सुविधादाता, मार्गदर्शक तथा प्रेरक के रूप में काम करने वाला बनाता हैं। शिक्षक ऐसा वातावरण तैयार करता हैं जिसमें शिक्षार्थी प्रश्न पूछतें हैं, खोज करते हैं, तथा स्वयं निष्कर्ष तक

पहुंचते हैं। इन प्रतिमानों क माध्यम से सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों मे ऐसे प्रश्न, गतिविधियां, एवं परियोजनाएं सम्मिलित की जानी चाहिए जो शिक्षार्थियों को विश्लेषण, मूल्यांकन, तर्क तथा निर्णय-निर्माण के लिए प्रेरित करे न कि केवल तथ्यों को याद करने मे सहायक हो। रचनावादी अधिगम प्रतिमान में मूल्यांकन केवल लिखित परीक्षा तक सीमित न होकर परियोजना, कार्य, पोर्टफोलियो, प्रस्तुतीकरण, केस विश्लेषण, सहपाठी मूल्यांकन, तथा आत्म-मूल्यांनक पर आधारित होना चाहिए जिससे शिक्षार्थी में वास्तविक समझ एवं उच्च स्तरीय चिंतन कौशल (HOTS) का आकलन संभव हो सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 भी अनुभवात्मक अधिगम, आलोचनात्मक चिंतन, सृजनात्मकता तथा समग्र विकास की प्राप्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है जिससे शिक्षार्थियों में उच्च स्तरीय चिंतन कौशल (HOTS) के विकास के साथ-साथ सम्पूर्ण विकास हो सके।

निष्कर्ष- प्रस्तुत वैचारिक का अध्ययन से स्पष्ट होता है कि रचनावादी अधिगम प्रतिमान सामाजिक विज्ञान शिक्षण को अधिक प्रभावी, अर्थपूर्ण सहभागितापूर्ण एवं शिक्षार्थी-केंद्रित बनाने की एक सशक्त शैक्षिक-दृष्टि प्रदान करता है। यह प्रतिमान इस सिद्धांत पर आधारित है कि शिक्षार्थी ज्ञान के निष्क्रिय ग्रहणकर्ता नहीं, बल्कि अपने पूर्वज्ञान, अनुभवों, सामाजिक अंतःक्रियाओं एवं चिंतन के माध्यम से सक्रिय रूप से ज्ञान का निर्माण करते हैं। इसलिए रचनावादी शिक्षण में सीखना केवल तथ्यों के स्मरण सीमित नहीं रहता, बल्कि विश्लेषण, व्याख्या, मूल्यांकन, अनुप्रयोग तथा सृजन जैसी उच्च संज्ञानात्मक प्रतिक्रियाओं के विकास पर बोल देता है। सामाजिक विज्ञान विषय की प्रकृति स्वयं रचनावादी अधिगम के अनुकूल हैं, क्योंकि इसमें इतिहास, भूगोल, नागरिक-शास्त्र, एवं अर्थशास्त्र से संबंधित अवधारणाओं को वास्तविक जीवन की परिस्थितियों, सामाजिक समस्याओं, तथा लोकतांत्रिक प्रतिक्रियाओं से जोड़कर पढ़ाया जा सकता है। समस्या आधारित अधिगम, परियोजना कार्य, केस अध्ययन वाद-विवाद, भूमिका निर्वहन, स्रोत विश्लेषण, क्षेत्र भ्रमण तथा सहयोगात्मक अधिगम जैसी रचनावादी रणनीतियां शिक्षार्थियों को सक्रिय रूप से सीखने के अवसर प्रदान करती है। अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि रचनावादी अधिगम प्रतिमान शिक्षार्थियों में उच्च स्तरीय चिंतन कौशल (HOTS) जैसे- विश्लेषणात्मक चिंतन, आलोचनात्मक चिंतन, समस्या-समाधान तथा निर्णय निर्माण के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये कौशल शिक्षार्थियों को तथ्यों का विश्लेषण करने, विभिन्न दृष्टिकोण का मूल्यांकन करने, प्रमाण आधारित निष्कर्ष निकालने तथा वास्तविक जीवन की समस्याओं के लिए तर्कसंगत समाधान विकसित करने में सक्षम बनाते हैं। इस प्रकार सामाजिक विज्ञान का अध्ययन केवल परीक्षा-केंद्रित न रहकर जीवनोपयोगी एवं समाजोपयोगी बन जाता है। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा-2023 द्वारा भी अनुभवात्मक, दक्षतामूलक एवं शिक्षार्थी-केंद्रीत शिक्षण पर बल रचनावादी का अधिगम प्रतिमान की प्रासंगिकता को और अधिक सुदृढ़ करता हैं। यह प्रतिमान शिक्षा को रटने की संस्कृति से मुक्त कर जिज्ञासा, अन्वेषण, नवाचार, सहयोग तथा आत्मचिंतन की दिशा में अग्रसर करता हैं। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सामाजिक विज्ञान शिक्षण में रचनावादी अधिगम प्रतिमान का प्रभावी एवं योजनाबद्ध उपयोग शिक्षार्थियों में उच्च स्तरीय चिंतन कौशल (HOTS), लोकतांत्रिक मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व, भौतिक दृष्टिकोण तथा आजीवन अधिगम के प्रवृत्ति के विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। इसलिए विद्यालयी पाठ्यक्रम, शिक्षण-पद्धतियों एवं मूल्यांकन प्रणाली तथा शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रमों में रचनावादी सिद्धांतों एवं रणनीतियों का समुचित समावेश किया जाना चाहिए जिससे सामाजिक विज्ञान शिक्षण अधिक से अधिक प्रासंगिक, प्रभावशाली तथा 21वीं सदीं की आवश्यकताओं के अनुरूप बन सके।

संदर्भ सूची

1. Anderson, L. W., & Krathwohl, D. R. (Eds.). (2001). A taxonomy for learning, teaching, and assessing: A revision of Bloom's taxonomy of educational objectives. Longman.
2. Brooks, J. G., & Brooks, M. G. (1999). In search of understanding: The case for constructivist classrooms (2nd ed.). Association for Supervision and Curriculum Development.
3. Bruner, J. S. (1966). Toward a theory of instruction. Harvard University Press.

4. Bybee, R. W. (1997). Achieving scientific literacy: From purposes to practices. Heinemann.
5. Dewey, J. (1938). Experience and education. Macmillan.
6. Fosnot, C. T. (2013). Constructivism: Theory, perspectives, and practice (2nd ed.). Teachers College Press.
7. Jonassen, D. H. (1999). Designing constructivist learning environments. In C.M. Reigeluth (Ed.), Instructional-design theories and models: A new paradigm of instructional theory (Vol. II, pp. 215–239). Lawrence Erlbaum Associates
8. Ministry of Education, Government of India. (2020). National Education Policy 2020. Government of India.
9. National Council of Educational Research and Training. (2005). National Curriculum Framework 2005. NCERT.
10. National Council of Educational Research and Training. (2023). National Curriculum Framework for School Education (NCF–SE 2023). NCERT.
11. Paul, R., & Elder, L. (2014). Critical thinking: Tools for taking charge of your professional and personal life (2nd ed.). Pearson.
12. Piaget, J. (1972). The psychology of the child. Basic Books.
13. Savery, J. R., & Duffy, T. M. (1995). Problem based learning: An instructional model and its constructivist framework. Educational Technology, 35(5), 31–38.
14. UNESCO. (2021). Reimagining our futures together: A new social contract for education. UNESCO.
15. Vygotsky, L. S. (1978). Mind in society: The development of higher psychological processes. Harvard University Press.

Cite the Article:

सलौदिया, प्रशांत, सिंह, प्रो.(डॉ.) सुनीता. (2026). सामाजिक विज्ञान में रचनावादी अधिगम आधारित प्रतिमान के माध्यम से शिक्षार्थियों में उच्च स्तरीय चिंतन कौशल (HOTS) का विकास. The Research Dialogue, 5(3), 274–279.DOI: https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i3.30

Disclaimer: The views, opinions, interpretations, analyses, conclusions, recommendations, and statements expressed in this research article are solely those of the author(s) and do not necessarily represent the views, policies, or positions of the Publisher, Chief Editor, Editors, Editorial Board, Reviewers, or their affiliated institutions. The author(s) bear full responsibility for the originality, accuracy, authenticity, and integrity of the manuscript and for ensuring compliance with applicable academic and ethical standards, including those relating to plagiarism, AI-generated or AI-assisted content, copyright infringement, data fabrication or falsification, and other forms of research or academic misconduct.